Title: Need to revert to the earlier system (Arewari) for assessing production of paddy in the country.

श्री शिशुपाल एन. पाटले (भन्डारा) : अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान धान उत्पादन करने की जो पुरानी पद्धति है, देश के जो धान उत्पादन करने वाले किसान हैं, उसकी ओर आकर्षित करना चाहता हूं। धान के उत्पादन को गिनने की एक पद्धति है, जिसे अवरेडी कहते हैं। यह पद्धति अंग्रेजों के समय से चली आ रही है, आज उसको बदलने की जरूरत है। अंग्रेजों के समय से चली आ रही इस पद्धति के कारण देश के धान उत्पादन करने वाले किसानों को कृषि बीमा योजना एवम् अन्य सुविधाओं से वंचित रहना पड़ रहा है। इसका कारण यह है कि अंग्रेजों के समय से चली आ रही इस पद्धति के अनुसार अगर एक हैक्टेयर में सात क्विंटल धान की फसल होती थी तो उसे सरकार 100 प्रतिशत फसल हुई, ऐसा मानती है। लेकिन उस समय खेती नैसर्गिक साधन सम्पत्ति पर आधारित थी। अभी जो खेती की जाती है वह आधुनिक पद्धति से की जाती है, जिसके कारण लागत बढ़ी है और उत्पादन की क्षमता भी बढ़ी है। इसका मतलब यह है कि अभी अगर एक

* Not Recorded

हैक्टेयर में 40 क्विंटल धान की फसल होती है तो देश के किसान 100 प्रतिशत फसल हुई है, ऐसा मानते हैं। लेकिन सरकार जब आने वाले उत्पादन को गिनने की पद्धति का उपयोग करती है, वह अंग्रेजों के समय से चली आ रही पद्धति का उपयोग करती है। अभी आधुनिक पद्धति से खेती करने से जो उत्पादन क्षमता बढ़ी है, उसके अनुसार अगर एक हेक्टेयर में सात क्विंटल धान की फसल हुई तो किसान उसको 20 प्रतिशत फसल हुई, ऐसा मानते हैं, जबकि सरकार की नजरों में वह 100 प्रतिशत फसल है। इस कारण देश के धान उत्पादन करने वाले किसानों को सरकारी सुविधाएं और कृषि बीमा योजना का लाभ नहीं मिलता, वे उससे वंचित रहते हैं। इसलिए आपके माध्यम से सरकार से विनती है कि वह इस पद्धति को बदलने के लिए कोई विशेष योजना बनाए, जिससे किसानों को लाभ हो सके.

MR. SPEAKER: Shri Basu Deb Acharia -- not present. Shri Harin Pathak.